Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

08

21वीं सदी के हिंदी साहित्य के नए विचार-प्रवाह

डॉ.शिवानंद एच कोली
सहायक निदेशक (राजभाषा अनुभाग)
राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन केन्द्रीय रेशम बोर्ड बेंगलुरू

सार -इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, संचार क्रांति, वैश्वीकरण और नई पहचान-राज नीतियों के उदय से प्रभावित होकर एक बहुवचन, जटिल और बहुरूपी संरचना के रूप में उभरता है। साहित्य में विधाओं, शिल्पों और विमर्शों का पुनः सृजन दृष्टिगोचर है। यह आलेख 21वीं सदी में हिंदी साहित्य के मुख्य विचार-प्रवाहों—कथेतर गद्य-विस्फोट, नए कथा-शिल्प, बहुवर्णीय कविता-दृष्टि, स्त्री, दलि, आदिवासी विमर्श, हाशिए की आवाज़ों का उभार तथा आलोचना की नई पद्धतियों—का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: परिवर्तनों, संचार क्रांति, वैश्वीकरण,बहुरूपी, पुनः सृजन, गद्य-विस्फोट, बहुवर्णीय, उदारीकरण, उपभोक्ता वाद,

प्रस्तावना- साहित्य को सामाजिक समय का दस्तावेज़ कहा जाता है। 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आरंभ हुए आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद, मीडिया विस्तार, इंटरनेट क्रांति और तीव्र नगरीकरण ने 21वीं सदी के हिंदी साहित्य को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। परिवर्तन की गति तीव्र हुई है, और साहित्य के निर्माण-बोध में अद्वितीय विविधता आई है।जहाँ एक ओर गद्य-विधाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है, वहीं दूसरी ओर कविता, कथाएँ, आलोचना, संस्मरण, आत्मकथा और पहचान-विमर्शों ने नए मुहावरे गढ़े हैं। इस समय का साहित्य एकरूपी नहीं, बल्कि बहुवचन (pluralistic) है—जिसमें अनेक सौंदर्य-चेतनाएँ, अनुभव-दृष्टियाँ और सांस्कृतिक भूगोल शामिल हैं।

1. साहित्यिक परिदृश्य के परिवर्तन की रूपरेखा: साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है, इसलिए सामाजिक, राजनीतिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ साहित्यिक परिदृश्य भी निरंतर बदलता रहता है। 20वीं सदी से लेकर 21वीं सदी तक साहित्य की भाषिक संरचना, विषय-वस्तु, शैली, संवेदना और माध्यम—सभी में महत्वपूर्ण रूपांतरण हुए हैं।

1.1 परिवर्तन की गति और साहित्य की जटिलता

पहले साहित्यिक परिवर्तन धीमे, क्रमिक और दीर्घकालिक होते थे। 21वीं सदी में तकनीकी उन्नति ने लिखने–पढ़ने की प्रक्रियाओं को तत्कालिक, संवादपरक और बहुआयामी बनाया है। साहित्यिक मंचों का डिजिटल विस्तार, नए भाषा-रजिस्टर, पाठकों का वैविध्य, त्वरित प्रसार इन सब ने साहित्य को न केवल सामाजिक रूप से अधिक लोकतांत्रिक बनाया है, बल्कि उसकी आलोचना और मूल्यांकन को भी अधिक कठिन बनाया है।

1.2 नई नागरिकता और हाशिए की उपस्थिति साहित्य के प्रतिनिधित्व में गाँव-कस्बों, प्रवासी भारतीयों, दलित-पिछड़े समुदायों, स्त्री लेखिकाओं का सशक्त प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन ने साहित्य की भाषा, शिल्प और विषय-सारणी को अभूतपूर्व विस्तार दिया है।

2. गद्य का विस्फोट और कथेतर लेखन का उत्कर्ष

21वीं सदी का प्रारंभ **गद्य का समय** है—यह अभिव्यक्ति मात्र एक रूपक नहीं बल्कि साहित्य-समीक्षा की एक स्वीकृत परिणति है।

2.1 कथेतर गद्य की लोकप्रियता

आज पाठक संस्मरण,यात्रा-वृत्तांत,आत्मकथा,जीवनी,रचनात्मक निबंध की ओर अधिक आकृष्ट हो रहे हैं। यह परिवर्तन इसलिए भी है कि जन-अनुभव, यथार्थ, तर्क और प्रत्यक्षता के साथ गद्य का संवाद अधिक सहज है।

उल्लेखनीय कृतियाँ: काशी नाथ सिंह — *काशी का अस्सी* रवींद्र कालिया — *गालिब छुटी शराब*
विश्वनाथ त्रिपाठी — *व्योम केश दरवेश* अनिल यादव — *वह भी कोई देश है महाराज* ओम थानवी — *मुअनजोदड़ो,* इन कृतियों में विधाओं का सम्मिलन, मुक्त आख्यान और भाषा का जीवन-आधारित प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. कहानी और उपन्यास के नए स्वर: 21वीं सदी का साहित्य सामाजिक–तकनीकी परिवर्तनों, वैश्वीकरण, डिजिटल संस्कृति और नए संवेदनात्मक अनुभवों से गहराई से प्रभावित हुआ है। परिणामस्वरूप कहानी और उपन्यास दोनों विधाओं में नए स्वरों का उभार दिखाई देता है—जो विषय-वस्तु, भाषा, शैली, कथन-तकनीक और दृष्टिकोण, सभी स्तरों पर बदलाव प्रस्तुत करते हैं।

3.1 नई पीढ़ी के कथा-लेखन की प्रवृत्तियाँ

कथाकारों की नई पीढ़ी किसी एक आग्रह, विचार-धारा या आंदोलन से बँधी नहीं है। उनका साहित्य में बहुल,प्रयोग शील, शिल्पनवोन्मेषी,अनुभव-आधारित है।

महत्वपूर्ण उपन्यासकार एवं कृतियाँ: मनीषा कुल श्रेष्ठ — *शिगाफ* रणेंद्र, *ग्लोबल गाँव के देवता,* भगवानदास मोरवाल, *बाबल तेरा देश में,* प्रदीप सौरभ — *मुन्नी मोबाइल* , नीलेश रघुवंशी — *एक कस्बे के नोट्स*

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

महत्वपूर्ण कहानी-संग्रह: मनोज रूपड़ा *टॉवर ऑफ़ साइलेंट* ,चंदन पांडेय *भूलना* ,नीलाक्षी सिंह, *परिंदे का इंतज़ार-सा*

3.2 यथार्थवाद से परे कथाशिल्प

साहित्य में यथार्थवाद का उद्देश्य जीवन को उसकी वास्तविक स्थिति में प्रस्तुत करना था। परंतु समय के साथ यह स्पष्ट हुआ कि यथार्थ केवल दृश्य-जीवन का चित्रण नहीं है; उसमें स्वप्न, स्मृति, कल्पना, प्रतीक, मनोवैज्ञानिक अनुभव और बहुआयामी सत्य भी शामिल हैं। इसी विस्तार ने कहानी और उपन्यास में **यथार्थ वाद से परे** जाने वाली नई कथा शिल्प तकनीकों को जन्म दिया। कथाकार अब पारंपरिक यथार्थ वाद को चुनौती देते हुए अपने कृतियों में जादुई-यथार्थ,लोक-आख्यायिकी,स्मृति-आलोचना,मिथकीय पुनर्लेखन का समावेश कर रहे हैं।विधाओं के मध्य की दीवारें टूट चुकी हैं—कहानी संस्मरण जैसी, और आत्मकथा उपन्यास जैसी प्रतीत होती है।

4. कविता का विस्तृत भूगोल और नए मुहावरे: 21वीं सदी में कविता का परिदृश्य पहले की तुलना में अत्यंत व्यापक, बहुस्तरीय और बहुभाषिक हुआ है। कविता आज केवल संवेदनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अनुभवों, इतिहास, स्मृति, संघर्ष और डिजिटल-युग के नवीन संदर्भों का विस्तारित भूगोल है। इसके साथ ही नए मुहावरों ने कविता को ताज़गी, गति और समकालीन जीवन की उष्मा प्रदान की है।कविता की लोकप्रियता कम होने की शिकायतों के बावजूद, यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि 21वीं सदी में कविता की संख्या, विविधता और रचनात्मक ऊर्जा व्यापक रूप से बढ़ी है।

4.1 तीन पीढ़ियों की समानांतर सक्रियता

वरिष्ठ पीढ़ी- केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, चंद्रकांत देवताले,

मध्यम पीढ़ी- अरुण कमल, लीलाधर जगूड़ी , नंदकिशोर आचार्य

युवा पीढ़ी- गीत चतुर्वेदी, अनामिका, पवन करण,बोधिसत्व

4.2 कविता के नए रूपक

रूपक कविता की आत्मा है—वह अनुभवों को प्रतीकों, संकेतों और तुलना के माध्यम से नई अर्थगर्भिता प्रदान करता है। 21वीं सदी में जीवन, तकनीक, राजनीति, पर्यावरण, मनोवैज्ञानिक तनाव और वैश्विक अनुभवों ने हिन्दी कविता को अनेक **नए रूपक** दिए हैं, जिन्होंने उसकी अभिव्यक्ति-विधि को अत्यधिक विस्तृत और जटिल बनाया है।नॉस्टैल्जिया की पुनराविष्कृति,आत्म-परक संवेदना, वैश्विक सांस्कृतिक अनुभव, लोकतांत्रिक प्रतिरोध**,** प्रेम और मनुष्यता का सार्वभौमिक बोध जैसे रूपक तत्वों प्रयोग कविताओं में मिलता है ।

5. अस्मितामूलक विमर्श: स्त्री, दलित, आदिवासी स्वर

अस्मिता मूलक विमर्श साहित्य में उन वर्गों, समुदायों और पहचानो को आवाज़ देता है जिन्हें परंपरागत सत्ता-संरचनाओं ने ऐतिहासिक रूप से हाशिये पर रखा। यह विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य में सामाजिक न्याय, समानता, प्रतिरोध और मानवीय अधिकारों के प्रश्नों को नई ऊँचाई देता है। स्त्री, दलित और आदिवासी अस्मिता—तीनों अपने-अपने अनुभवों, संघर्षों और सांस्कृतिक स्मृतियों के आधार पर विशिष्ट साहित्यिक स्वर रचते हैं। 21वीं सदी का सबसे महत्त्वपूर्ण साहित्यिक परिवर्तन अस्मिता मूलक लेखन की सशक्त उपस्थिति है।

5.1 **स्त्री-विमर्श-** स्त्री लेखन अब मात्र प्रतिरोध या आत्म कथात्मक लगाव तक सीमित नहीं, बल्कि, सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक असमानताओं,पारिवारिक सत्ता,देह-राजनीति और श्रम-संस्कृति का बहुपक्षीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

महत्वपूर्ण कृतियाँ:अनामिका — *दूब-धान* ,कात्यायनी — *सात भाइयों के बीच चंपा*

5.2 दलित-विमर्श

दलित-विमर्श आधुनिक भारतीय साहित्य का वह वैचारिक आंदोलन है, जिसने सदियों से वंचित, शोषित और अस्पृश्यता का दंश झेलते समुदायों की पीड़ा, संघर्ष, अनुभव और आत्मसम्मान की आकांक्षा को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया। यह केवल साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुक्ति का विमर्श है। दलित लेखन में भाषा की सीधी, तीखी और अनुभव-सम्पन्न अभिव्यक्ति ने साहित्यिक विमर्श को नई संवेदना प्रदान की है।

प्रमुख कृतियाँ: तुलसीराम — *मुर्दहिया* धर्मवीर — *मैं, मेरी पत्नी और भेड़िया*

5.3 आदिवासी-विमर्श

आदिवासी-विमर्श भारतीय साहित्य का उभरता हुआ, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण विमर्श है। इसका उद्देश्य आदिवासी जीवन, संस्कृति, संघर्ष, विस्थापन, पर्यावरण, अधिकारों और पहचान से जुड़े प्रश्नों को साहित्य के केंद्र में लाना है। यह केवल साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि **सांस्कृतिक अस्तित्व और आत्मनिर्णय के अधिकार** का संघर्ष भी है।यह विमर्श अभी विकसित हो रहा है, परंतु उसमें—वन, भूमि, भाषा, परंपरा और सांस्कृतिक संहार के प्रश्न उभरकर सामने आए हैं।

6. आलोचना के नए प्रतिमान

साहित्यिक आलोचना केवल कृति की सुंदरता या शैली का मूल्यांकन नहीं रही; यह समाज, संस्कृति, विचार और भाषा के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी में आलोचना के नए प्रतिमान उभर कर आए हैं, जो पारंपरिक

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4 November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

औपचारिक आलोचना से कहीं अधिक बहुआयामी, बहुसांस्कृतिक और बहुभाषिक दृष्टि अपनाते हैं।हिंदी आलोचना अब केवल अकादमिक न होकर बहुविध दृष्टियों से समृद्ध हो रही है।

प्रमुख आलोचक और कृतियाँ:

- अपूर्वानंद — *सुंदर का स्वप्न*
- पुरुषोत्तम अग्रवाल — *अकथ कहानी प्रेम की*
- वीरभारत तलवार — *रस्साकशी*
- पल्लव — *कहानी का लोकतंत्र*

नई आलोचना— पाठक-संस्कृति, भाषा-राजनीति, सांस्कृतिक अध्ययन,नई मीडिया संस्कृति को केन्द्र में रखती है।

7. डिजिटल साहित्य और नई मीडिया संस्कृति

21वीं सदी में सूचना और संचार क्रांति ने साहित्य और सांस्कृतिक अनुभव के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और नई मीडिया तकनीक ने साहित्य के निर्माण, वितरण और अनुभव को बहुआयामी और इंटरैक्टिव बना दिया है। इसे हम **डिजिटल साहित्य** और **नई मीडिया संस्कृति** के संदर्भ में समझ सकते हैं।21वीं सदी के साहित्य में इंटरनेट, ब्लॉग, फेसबुक, यूट्यूब और पोडकास्ट निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।

डिजिटल साहित्य की विशेषताएँ

तात्कालिक,संवादपरकता, बहुआयामी पाठक-वर्ग**,** गैर-औपचारिक भाषा**,**वैकल्पिक अभिव्यक्ति यह साहित्य परंपरागत प्रकाशन-व्यवस्था को चुनौती देता है और लेखक को सीधा पाठक से जोड़ता है।

निष्कर्ष:

21वीं सदी का हिंदी साहित्य **संपूर्ण, संवेदनशील और लोकतांत्रिक** है। यह साहित्य न केवल सौंदर्य और भावनाओं का माध्यम है, बल्कि **सामाजिक न्याय, पहचान, अधिकार, संघर्ष और नवाचार** का मंच भी बन गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य ने परंपरा की जड़ें बनाए रखते हुए **नए स्वर, नए रूपक और नए विमर्श** को जन्म दिया है, जो आने वाले समय में और अधिक समृद्ध और बहुआयामी होंगे। बहुरंगी,बहुवचन,अस्मिता मूलक,प्रयोग शील,डिजिटल-संवादी साहित्य है।यह न तो किसी एक आंदोलन का साहित्य है, न किसी एक विचारधारा का—बल्कि विविध अनुभवों, वर्गों, भाषिक मुहावरों और सांस्कृतिक भूगोलों का जटिल समुच्चय है।

इस साहित्य में गद्य का वर्चस्व,कथा और कविता का विस्तार,आलोचना के नए प्रतिमान,हाशिए की आवाज़ों का केंद्रीकरण,डिजिटल संस्कृति की व्यापकता सब मिलकर इसे विशिष्ट और ऐतिहासिक बनाते हैं।

संदर्भ–सूची

1. सिंह, काशीनाथ. *काशी का अस्सी.* राजकमल प्रकाशन।
2. कालिया, रवींद्र. *ग़ालिब छुटी शराब.* वाणी प्रकाशन।
3. त्रिपाठी, विश्वनाथ. *व्योमकेश दरवेश.* राजकमल।
4. यादव, अनिल. *वह भी कोई देश है महाराज.* राजकमल।
5. थानवी, ओम. *मुअनजोदड़ो.* राजकमल।
6. रणेंद्र. *ग्लोबल गाँव के देवता.* आदिवाणी/राजकमल।
7. कुलश्रेष्ठ, मनीषा. *शिगाफ.* हिंद युग्म।
8. तुलसीराम. *मुर्दहिया.* राजकमल प्रकाशन।
9. अनामिका. *दूब-धान.* वाणी प्रकाशन।
10. अग्रवाल, पुरुषोत्तम. *अकथ कहानी प्रेम की.* राजकमल।
11. तलवार, वीरभारत. *रस्साकशी.* राजकमल।
12. पल्लव. *कहानी का लोकतंत्र.* वाणी प्रकाशन।
13. डबराल, मंगलेश; जगूड़ी, लीलाधर; आचार्य, नंदकिशोर — विविध कविता-संकलन।
14. पांडेय, चंदन. *भूलना.* हिंद युग्म।

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved